ॐ

नमः सिद्धेभ्यः।

कविवर टेकचन्दजी कृत

पञ्चमेरु और नन्दीश्वर पूजन विधान

अथ व्रतमाहात्म्य वर्णन

(सर्वदीर्घ वेसरी छन्द)

वानी पूजों देवा केरी। तातैं टूटे मोहा जेरी।।
साधा ध्याऊँ साँचा भाऊं। या भौ माहीं नाहीं आऊँ।।१।।

(सर्वदीर्घ जोगीरास की चाल)

देवा सेवो सो या भौ में आवा जावो हारै।
आपा तार्यो औरै तारै ज्यों नावा औतारै।
जाका ध्याना जोगी आना पापा हाना काजै।
ऐसो नाथो द्यो मो साथो भौ भौ साता साजै।।२।।

साधा साधो जो या भौ में जाकै रागा नाहीं।
आपा साधै प्रानी नावा ध्याना ध्येना माहीं।
तापा आपै जापा जापै मोकों राखै सोही।
मेरो सीसा याके पावें नाखो दीना होही।।३।।

ऐसे देवा याकी वानी साधा तीनों सोही।
मो को ज्ञानो ऐसो दीजौ मो पै राजी होही।
तातैं नांदी दीपा पांचों मेरा पूजा सारी।
पूरी हो जावै सो कीजौ ऐसी वाँछा म्हारी।।४।।

(वेसरी छन्द)

या पूजा श्रीपाले कीनी। काया रोगा की खय लीनी।
या पूजा सो लोका देवैं। जो जीवा नीका ह्वै सेवैं।।५।।

(सर्वलघु दोहा)

वरत यह सुखकरन लख समचित कर सिव सहल।
पहल करम सब नस भजय कर यह वरत जु टहल।।६।।

(चौपाई)

यो व्रत मयणासुन्दर करौ। सुभट सातसै को दुख हरौ।
ताकर जगमें महिमा पाय। इम लख भव पूजौ मनलाय।।७।।

(अडिल्ल छन्द)

बरस एक में बार तीन यह व्रत करै।
कातिक फागुन सुदी अषाढ़ विषैं धरै।
करै वर्स लग आठ तथा वृष तीन जी।
सक्त बड़ी का धार करै परवीन जी।।८।।

(सोरठा)

शक्त बड़ी धर सोय, करै बहुत दिन भी सही।
उद्यापन फिर होय, नाहीं व्रत दूनों करै।।९।।

(गीता छन्द)

पीछै जु शक्ति प्रमाण अपनी द्रव्य तैं पूजा करै।
उपकरण सुन्दर छत्र चामर लायकें मन्दिर धरै।।
पुस्तक लिखावै दान करुणा देय दीन बुलाय जी।
इस रीति धर्म उद्योत ठानै जीव सो शिव पाय जी।।१०।।

(पद्धरी छन्द)

या विध अनेक महिमा निधान। यह वरत कहो धुनि में प्रमाण।।
कवि कबलौं गुण भाषै अपार। बहु कहिये कहाँ जगमांहि सार।।

।। इति व्रतमहिमा समाप्त ।।

अथ समुच्चय पूजा

स्थापना (चाल जोगीरासे की)

पांचौ मेर महान कनक के तिन पै जिन के थानौं।
गिनत असी तिन मांहि बिम्ब हैं रतनमई पुन खानों।
देव खगा तौ जाय जजैं वहाँ हम यहाँ भावना भावें।
तातैं मेरन के जिनबिम्ब सु थापन थाप जजावैं।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

(चाल जोगीरासे की)

निर्मल मन सोही जल उज्वल भाजन भाव करायो।
आर्ज्य भाव रस सोही जीवा ता बिना पय धर लायो।
बीसी चार सबै जिन मन्दिर पांच मेर के जानौं।
सो मैं मन वच काय जजत हों करन पापको हानों।।१।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

शीतल भाव कियौ शुभ चन्दन भक्त गंध को धारी।
मंद मोह झारी करता मैं भर लायौ सुखकारी। बीसी० ।।२।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं०

भाव अखण्डित उज्वल सोही अक्षत सुभग बनाए।
नाना भक्त उपाय उक्त तैं पुन्यबंध को आये। बीसी० ।।३।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्०

भाव प्रफुल्लित फूल बनाये बहुविध भक्ति सुरंगा।
विनयवान तामें गंध नीकी पुष्पन लायौ चंगा।
बीसी चार सबै जिन मन्दिर पांच मेर के जानौं।
सो मैं मन वच काय जजत हों करन पापको हानों।।४।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं०

परणत परम मनोज्ञ तने मैं शुभ नैवेद्य बनायौ।
नाना रस नय द्वार घनी यह भक्त भाव कर आयौ। बीसी० ।।५।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं०

सम्यक्ज्ञान प्रकाश सकल तत्त्वन को दीप बनाई।
हरष सो पातर कीनो ता धर नीकी आरति छाई। बीसी० ।।६।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं०

अष्ट करम शुभ चंदन पीस्यौ ताकी धूप बनाई।
धर्म ध्यान बहु तेज अगनि में जारी प्रीति बढ़ाई। बीसी० ।।७।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं०

पाप रहित परिणाम किए फल समता थाल भराये।
आनंद होत सुलेय हाथ में बहुविध जिन गुन गाये। बीसी० ।।८।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं०

ऐसे आठों द्रव्य मनोहर ताको अरघ बनाई।
निर्मल भाव बनाय रकेबी ता धर शीश नवाई। बीसी० ।।९।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं० निर्व०

(चौपाई)

पांचों मेर असी जिन धाम। है विन कीये ध्रुव तिस ठाम।
तिन मध बिम्ब देव जिनराय। सो मैं पूजों अर्घ चढ़ाय।।१०।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक मेरु पूजा

प्रथम सुदर्शनमेरु की पूजा

(अडिल्ल छन्द)

मेर सुदरशन जान बड़े विस्तार जी।
मानूं स्वर्ग थंभन कूं थंभा सार जी॥
जापै षोडश धाम जिनेसुर के सही।
सो हम थापन थाप जजैं इसही मही॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

(चौपाई)

निरमल नीर गंग को लाय। झारी मणिमय माहिं धराय।
मेरु सुदरशन जिनके धाम। षोडश पूजों तीरथ ठाम॥१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

बावन चंदन नीर घसाय। लायौ प्रभु पातर में जाय। मेरु०॥२॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं०

अक्षत मुक्ताफल से लाय। उज्वल खंड बिना सुखदाय। मेरु०॥३॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्०

फूल कल्पद्रुम के सुखरूप। लायो माला गूँथ अनूप। मेरु०॥४॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं०

नाना रस नैवेद बनाय। मोदक आदि भले सुखदाय।
मेरु सुदरशन जिनके धाम। षोडश पूजों तीरथ ठाम।।५।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं०

दीपक रतनमई तम हार। लायौ धर पातर में सार। मेरु०।।६।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं०

सार धूप दशगंध बनाय। खेऊँ जिन चरनन सुखदाय। मेरु०।।७।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं०

श्रीफल खारक अनि फल और। लायो भक्त हिये धर जोर। मेरु०।।८।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं०

जल चंदन अक्षत पुह लेय। चरु दीपक फल धूप सु खेय। मेरु०।।९।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं०

प्रत्येक अर्घ

(पद्धरी छन्द)

वन भद्रसाल जिन थान चार। बिन कीने शाश्वत पुन्यकार।।
ते पूजों वसु द्रव्य अर्घ लाय। सम्बन्ध सुदर्शन मेरु पाय।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभद्रशालसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

नंदनवन चव जिन थान जान। सो तीर्थ पापहारी सु मान।। ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुनंदनवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

चव जिन थल सोहें सौमनस थान। सब रतनखंड उपमा निधान।। ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसौमनवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

जिन थल चव पांडुक वन मँझार। सुर खग पूजें तहाँ भक्ति धार।। ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपांडुकवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

चव गजदंतो चव जिन सुगेह। महा सुन्दर देखें होय नेह।
ते पूजों वसु द्रव अर्घ लाय। सम्बन्ध सुदर्शन मेरु पाय॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुश्चतुर्गजदंतसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

जम्बू वृक्षै जिन थान सोय। रचना मणिमय तहाँ बिम्ब जोय॥ ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुजम्बूवृक्षस्थजिनालयाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

जिन थान शालमलि वृक्ष ठांहि। मुख महिमा कहते पार नाहिं॥ ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

सुदरशनमेरु दक्षिण दिसाय। जिन थान कुलाचल पै जो पाय।
तिनमें जिनबिम्ब मनोज्ञ सोय। जिनके पद पूजों दीन होय॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिदक्षिणदिक्कुलाचलस्थजिनालयायअर्घं निर्वपामीति० ॥८॥

उत्तरदिश याही मेर जान। जिनभवन कुलाचल पै सुथान॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिउत्तरदिशात्रयकुलाचलस्थजिनालयेभ्यो अर्घं निर्व० ॥९॥

सुदरशनमेरु पूरब दिशाय। जिन थान वक्षारन सीस पाय॥ तीन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपूर्वदिशासम्बन्ध्यष्टवक्षारगिरस्थजिनालयेभ्यो अर्घं निर्व० ॥१०॥

पच्छिम दिश येही मेरु सार। वक्षारन पै जिन भवन धार॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपच्छिमदिशासम्बन्ध्यष्टवक्षारगिरिजिनालयेभ्यो अर्घं निर्व० ॥११॥

इस मेर सुदरशन पूर्व जाय। विजयारध पै जिन भवन पाय॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनसम्बन्धिपूर्वदिशायाषोडशविजयार्धपर्वतस्थषोडशजिनालयेभ्यो अर्घं० ।१२।

पच्छिम सुदरशन मेरु ठांहि। वैताडन पै जिनभवन पाहि॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिपश्चिमदिशिविजयार्धपर्वतस्थजिनालयेभ्यो अर्घं० ॥१३॥

इस मेर सुदरशन दछन जानि। रूपाचल पै इक जिन सुथानि॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुदक्षिणदिशिरूपाचलस्थैकजिनालयाय अर्घं निर्व० ॥१४॥

उत्तर दिश इसही मेर जान। विजयारध पै जिनभवन मान॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरोत्तरदिशि रूपाचलस्थैकजिनालयाय अर्घं निर्व० ॥१५॥

(अडिल्ल छन्द)

तीस चार वैताढ सोल वक्षार जी।
दोय विरछ षट कुलाचला लख सार जी।
षोडश वन के थान चार गजदन्त हैं।
ह्याँ इक इक जिनभवन जजा ते सन्त हैं।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्ध्यष्टसप्ततिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१६॥

अथ जयमाला

(दोहा)

मेरु सुभग थानक भलौ, तीरथ पातक नास।
जजौं थान इस संग के, मन वच तन ह्वै दास॥१॥

(चाल–ते गुरु की)

मेरु सुदरशन सोहनौ, तीरथ पद सुखदाय। टेक।

ऊँचो जोजन लाख है, सब कनक स्वरूप।
नीचै को मणि तेज है, बहु घेर अनूप। मेरु० ॥२॥

भद्रसाल वन मेरु की, जड़ भौम मँझार।
ता ऊपर फिर जाइये, वन नन्दन सार। मेरु० ॥३॥

ता ऊपर वन सोम हैं, तीजौ वन सोय।
ऊपर पांडुक वन कहौ, चौथो अवलोय। मेरु० ॥४॥

इक वन वन, चव जानियो, श्री जिनवर ठाम।
कनक रतन जड़ियो सही, सब करौ प्रणाम। मेरु० ॥५॥

ठाम ठाम सर वावड़ी, शुभ महल अनूप।
देव तहाँ क्रीडा करैं, वापक गुन रूप। मेरु० ॥६॥

कै चारन मुनि जाय हैं, जिन वंदन काज।
ध्यान धरें शुभ थान में, पावैं शिवराज। मेरु० ॥७॥

पांडुक वन में जानिये, मध चूलक ठाम।
वैडूरक मणिमय सही, रंग हरत सुधाम। मेरु० ॥८॥

जोजन तुंग चालीस है, तिस ऊपर जोय।
केस अंतरै स्वर्ग है, सौधर्म जुग सोय। मेरु० ॥९॥

इत्यादिक महिमा घनी, कबलों वरनाय।
सहस जीभतैं कीजिये, तौहु पार न पाय। मेरु० ॥१०॥

सब गिरि में परधान है, यह मेर महान।
याके अन परवार हैं, तहाँ जिनके थान। मेरु० ॥११॥

तीस चार वैताढ हैं, षोडस वक्षार।
और कुलाचल षट सही, गजदन्त वृक्ष सार। मेरु० ॥१२॥

एक एक जिन थान है, मैं पूजों सार।
मेरु सुदरशन है सही, कंचन वरन अपार। मेरु० ॥१३॥

(दोहा)

मेरु माहिं मन राखिये, तहाँ अकीर्तम थान।
जिनके मुनि चारण तहाँ, तातैं नमि पुनि आनि॥१४॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति सुदर्शनमेरु पूजा सम्पूर्ण)